संगम ही नहीं अपितु 'रघुनाथ मंदिर' भी पौराणिक महत्ता बताता है देवप्रयाग की।

प्रेमसागर उनियाल
रुड़की

सुदर्शन क्षेत्र देवप्रयाग, गढ़वाल हिमालय के 13 प्रमुख प्रयागों में प्रयागराज के बाद महत्वपूर्ण माना जाता है। देवप्रयाग केवल संगम के लिए ही महत्वपूर्ण नहीं है अपितु यहां स्थित रघुनाथ मंदिर यहां की पौराणिकता को दर्शाता है। संगम से 101 सीढ़ियां चढ़ने के बाद गोरखा आधिपत्य काल के पुराने पुस्ते के ऊपर बनी खोली पर एक अपठनीय पुरातात्विक लेख विद्यमान है। यहां के पंडे पुजारी इस खोली को घंडियाल की खोली के नाम से पुकारते हैं। इस खोली की सीढ़ियां कट्ठोर चट्टानों को काटकर बनाई गई हैं। ये सीढ़ियां तीर्थयात्रियों को एक समतल प्रांगण में पहुंचाने में सहायक होती हैं। निसंदेह इन्हें देखकर लगता है कि इनके निर्माण में एक युग का समय बीता होगा। यहां पर काली मंदिर के सामने एक डोम चौक है। जहां पर बाजा बजाने वाले अक्सर ढ़ोल–बाजा बजाया करते हैं। अलकनन्दा व भागीरथी अथवा स्वेत व कृष्ण नदियों के संगम के साथ ही यहां से गंगा का उद्भव भी हो जाता है। मान्यता है कि यहां पर स्नान करने अथवा शरीर त्यागने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है। यहीं पर स्थित है विशालकालय 'रघुनाथ' मंदिर। जो अपनी पौराणिक महत्ता को सहज ही बताता है।

''गत्वा देवप्रयाग चालकनन्दा तटेन वे।
नर नारायणं गत्वा दर्शनान्मुक्तिदां नृणाम्।।''

प्रयागराजों में महत्वपूर्ण देवप्रयाग की महिमा का वर्णन यूं तो पुराणों में बहुत मिलता है परन्तु केदारखण्ड के उपपुराण को छोड़कर किसी अन्य पुराण में देवप्रयाग नाम का उल्लेख नहीं हुआ है। इस क्षेत्र को पौराणिक कथाओं में सुदर्शन क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। 15वीं सदी ईसवी से पूर्व आनन्द रामायण व अध्यात्म रामायण में श्री रामचन्द्र जी की तीर्थ यात्रा का वर्णन द्वितीय कांड में मिलता है। जिससे स्पष्ट होता है कि नर–नारायण तीर्थ अथवा बद्रीनाथ जाने के मार्ग पर देवप्रयाग से होकर पहुंचा जाता है। इस बात का गवाह संगम में रघुनाथ जी का मंदिर भी है।

2266 फीट की ऊंचाई पर भागीरथी व अलकनंदा के संगम के ठीक ऊपर रघुनाथ (श्री रामचन्द्र) जी का मंदिर स्थित है। ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक महत्व से महत्वपूर्ण मंदिर के शिखर पर सोने का कलश विराजमान है। जो तीर्थ यात्रियों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करता है। मंदिर निर्माण में नागर शैली अपनाई गई है परन्तु इसके शिखर पर कैत्यूरी शैली की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। तथा यहां के अभिलेखों से यह महसूस होता है कि इस मंदिर का जीर्णोद्वार बार–बार किया गया है। शिखर के नीचे गर्भगृह में श्याम रंग की भगवान राम की मूर्ति के बांये ओर माता जानकी की तथा दांये ओर लक्ष्मण की मूर्ति है। साथ ही मंदिर में दाहिने ओर बद्रीनाथ, महादेव और काल भैरव हैं। बांयी ओर महादेव स्थापित हैं। पीछे की ओर कुछ ऊंचाई पर श्री महावीर का छोटा सा मंदिर है। पूरा मंदिर बड़ी–बड़ी कट्टवा पत्थर की शिलाओं से निर्मित है। जिस पर सजावट की गई है।

मंदिर में काष्ठ छत्र के प्रस्तर युक्त कैत्यूरी शिखर शैली में बना यह मंदिर केदारनाथ और गोपेश्वर के विशाल मंदिरों के समकक्ष है। यह मंदिर 6 फुट ऊंची टैरिस पर 20 गुना 30 गज में तीरथ शैली में बना है। विशाल शिला खंड़ों को जोड़कर बनाए गये 80 फुट ऊँचे इस भव्य मंदिर का कीर्ति–ध्वज दूर से ही दिखाई देता है। मंदिर का अंतिम प्रमुख जीर्णोद्वार 1803 ईसवी में भूकम्प के बाद ग्वालियर नरेश दौलतराव सिंधिया द्वारा कराये जाने का उल्लेख अभिलेखों में मिलता है।

'उत्तराखण्ड के तीर्थ और मंदिर' नामक पुस्तक में उल्लेख है कि मंदिर की स्थापना के बाद समय–समय पर अपरिहार्य कारणों से मंदिर के मुख्य देवता की मूर्ति में परिवर्तन होता आया है। मंदिर के सामने नीचे चौक में पीपल की बनी एक सुन्दर गरूड़ मूर्ति ऊंची पीठिका पर आसीन दिखाई देती है जिसे अब नये निर्माण में सतर्कता से लोहे के पिंजरे में बन्द कर दिया गया है। हाथ जोड़े घुटने टेके, कुंडल और नागधारी लम्बी नाक की सुन्दर गरूड़ की मूर्ति से भी सुन्दर एक और बड़ी गरूड़ की मूर्ति पहले यहां रखी रहती थी, जिसे अब भंडार कक्ष में रखा गया है।

देव्रपयाग, संगम अथवा रघुनाथ मंदिर के लिए ही नहीं, अपितु मंदिरों के समूह और गुफाओं के लिए भी प्रसिद्ध है।

मंदिर के पीछे हनुमान मंदिर में 17वीं सदी की हनुमान मूर्ति है। उसी के बगल में एक छोटा मंदिर और था जो युग प्रभाव से टेढ़ा हो गया था, वहां रखे शिवलिंग के आधार पर उसे टेढ़ा महादेव नाम दिया गया था। समय के साथ–साथ अब वहां फर्श के प्रतीक चिन्ह ही बचे हैं। संगम पर ही एक छोटा सा मंदिर शंकराचार्य द्वारा बनाया गया है। रघुनाथ मंदिर के अगल–बगल में प्राचीन काल के अनेक समाधि मंदिर जागेश्वर कुमाऊँ के मंदिरों के समान विद्यमान है। यहां दो सती मंदिर भी हैं। इसके अलावा छोटे–छोटे कई अन्य मंदिर भी विद्यमान हैं। बामन गुफा व गोपाल गुफा पुरातत्व की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण हैं।

प्राचीन समय से ही देवप्रयाग नगरी तीर्थयात्रियों के महत्वपूर्ण पड़ाव, गंगा के उद्भव व संगम के लिए प्रसिद्ध रही है। वहीं उत्तराखण्ड के 5 प्रयागों में महत्वपूर्ण प्रयाग 'देवप्रयाग' को मोक्ष अथवा पाप विनाशक तथा स्वर्ग का मार्ग माना जाता है। आज भी धर्मावलंबी पवित्र संगम पर स्नान कर रघुनाथ जी के दर्शनों के बाद 'बद्रीनाथ व केदारनाथ' की यात्रा पर निकलते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि उत्तराखण्ड में रघुनाथ के बहुत ही कम पौराणिक मंदिर हैं, जिनमें देवप्रयाग का महत्वपूर्ण स्थान है।